Dr Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

Unit – III :
आधुनिक बिहार की शुरुआत
(Beginning of Modern Bihar)

स्थायी बंदोबस्त के सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक परिणाम : बिहार के ग्रामीण जीवन में गहरा परिवर्तन

1793 ई. में लागू स्थायी बंदोबस्त केवल एक राजस्व व्यवस्था नहीं थी, बल्कि उसने बिहार के सामाजिक ढाँचे, आर्थिक संबंधों और ग्रामीण जीवन को गहराई से प्रभावित किया। यह व्यवस्था ऊपर से देखने पर प्रशासनिक स्थिरता और राजस्व की नियमितता सुनिश्चित करने का माध्यम प्रतीत होती थी, परंतु इसके भीतर अनेक ऐसी विसंगतियाँ छिपी थीं, जिन्होंने आने वाले समय में बिहार की सामाजिक संरचना को असंतुलित और विषम बना दिया। स्थायी बंदोबस्त ने भूमि स्वामित्व की अवधारणा को बदल दिया और परंपरागत ग्रामीण समाज को एक नए वर्गीय ढाँचे में ढाल दिया।

सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन भूमि स्वामित्व की प्रकृति में आया। जमींदारों को भूमि का स्थायी स्वामी मान लिया गया, जबकि वास्तविक कृषक, जो पीढ़ियों से भूमि की जुताई-बुवाई करते आ रहे थे, वे केवल किरायेदार बनकर रह गए। इस परिवर्तन ने ग्रामीण समाज में शक्ति-संतुलन को पूरी तरह बदल दिया। पहले जहाँ जमींदार और कृषक के बीच संबंध अपेक्षाकृत पारंपरिक और सामाजिक आधार पर टिके थे, वहीं अब यह संबंध कानूनी और आर्थिक दबाव पर आधारित हो गया। जमींदारों को अंग्रेजी शासन का संरक्षण प्राप्त था, इसलिए वे किसानों

से मनमाना लगान वसूलने लगे। किसान यदि समय पर लगान अदा न कर पाते, तो उन्हें भूमि से बेदखल कर दिया जाता।

इस व्यवस्था का आर्थिक प्रभाव अत्यंत गहरा था। अंग्रेजी सरकार को निश्चित और स्थायी राजस्व चाहिए था, इसलिए जमींदारों पर राजस्व चुकाने का कठोर दबाव रहता था। यदि जमींदार समय पर राजस्व जमा नहीं कर पाते, तो उनकी संपत्ति नीलाम कर दी जाती। परिणामस्वरूप कई पारंपरिक जमींदार अपनी भूमि से वंचित हो गए और उनकी जगह नए प्रकार के भू-स्वामी उभरे, जिनका मुख्य उद्देश्य केवल लाभ कमाना था। इन नए जमींदारों का ग्रामीण समाज से भावनात्मक या सामाजिक संबंध नहीं था; वे केवल राजस्व वसूली पर ध्यान केंद्रित करते थे। इससे किसानों की स्थिति और अधिक दयनीय हो गई।

किसानों पर दोहरा बोझ पड़ा। एक ओर उन्हें जमींदारों को अधिक लगान देना पड़ता था, और दूसरी ओर प्राकृतिक आपदाओं—जैसे बाढ़, सूखा और फसल की विफलता—का सामना करना पड़ता था। बिहार की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि यहाँ नदियों की अधिकता के कारण बाढ़ की समस्या सामान्य रही है। परंतु स्थायी बंदोबस्त की कठोरता के कारण प्राकृतिक आपदा के समय भी लगान में कोई कमी नहीं की जाती थी। इससे किसान कर्ज़ लेने को मजबूर हो जाते। महाजनों और साहूकारों का प्रभाव तेजी से बढ़ा। ऊँची ब्याज दरों पर दिए गए ऋण ने किसानों को स्थायी ऋणग्रस्तता के चक्र में फँसा दिया। इस प्रकार ग्रामीण अर्थव्यवस्था असंतुलित और शोषण-प्रधान बन गई।

सामाजिक दृष्टि से भी यह व्यवस्था अत्यंत महत्वपूर्ण थी। जमींदार वर्ग अंग्रेजी शासन का समर्थक और सहयोगी बन गया। उन्हें प्रशासनिक और कानूनी संरक्षण प्राप्त था, जिससे वे ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभुत्वशाली वर्ग के रूप में स्थापित हो गए। दूसरी ओर किसान वर्ग आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर होता गया। इस असमानता ने ग्रामीण समाज में वर्ग विभाजन को स्पष्ट और स्थायी बना दिया। भूमि स्वामित्व और आर्थिक संसाधनों का केंद्रीकरण एक छोटे वर्ग के हाथों में हो गया, जबकि बहुसंख्यक किसान निर्धनता और असुरक्षा में जीवन व्यतीत करने लगे।

स्थायी बंदोबस्त का एक और प्रभाव यह हुआ कि कृषि सुधार की अपेक्षा राजस्व संग्रह प्राथमिक उद्देश्य बन गया। अंग्रेजों का विश्वास था कि भूमि का स्थायी स्वामित्व मिलने से जमींदार कृषि सुधार में निवेश करेंगे, परंतु व्यवहार में ऐसा नहीं हुआ। अधिकांश जमींदारों ने कृषि में सुधार करने के बजाय अधिक से अधिक लगान वसूलने पर ध्यान दिया। सिंचाई, उन्नत बीज या कृषि तकनीक के विकास की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। इससे बिहार के कृषि क्षेत्र में अपेक्षित प्रगति नहीं हो सकी और उत्पादन क्षमता सीमित रही।

प्रशासनिक स्तर पर भी इस व्यवस्था ने औपनिवेशिक शासन को मजबूत किया। राजस्व की निश्चितता ने अंग्रेजी सरकार को आर्थिक स्थिरता प्रदान की, जिससे वह अपनी सेना और प्रशासनिक तंत्र को सुदृढ़ कर सकी। इस प्रकार स्थायी बंदोबस्त ने ब्रिटिश शासन की जड़ों को मजबूत किया। बिहार में औपनिवेशिक सत्ता का विस्तार इसी आर्थिक आधार पर टिका हुआ था। राजस्व से प्राप्त आय का उपयोग प्रशासनिक संरचना के विस्तार और सैन्य शक्ति को बनाए रखने में किया गया।

दीर्घकालिक दृष्टि से देखें तो स्थायी बंदोबस्त ने बिहार में सामाजिक असंतोष की भावना को जन्म दिया। किसानों के शोषण और आर्थिक संकट ने धीरे-धीरे प्रतिरोध की चेतना को जन्म दिया। यद्यपि प्रारंभिक चरण में यह असंतोष बिखरा हुआ था, परंतु समय के साथ यह संगठित आंदोलनों में परिवर्तित हुआ। आगे चलकर बिहार में किसान आंदोलनों और राष्ट्रीय आंदोलन में किसानों की सक्रिय भागीदारी के पीछे इस व्यवस्था से उत्पन्न पीड़ा और असमानता की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

इस प्रकार स्थायी बंदोबस्त ने बिहार के ग्रामीण जीवन को केवल आर्थिक रूप से ही नहीं, बल्कि सामाजिक और राजनीतिक रूप से भी बदल दिया। इसने एक नए वर्गीय समाज की रचना की, जिसमें जमींदार और किसान के बीच गहरी खाई उत्पन्न हुई। यह व्यवस्था आधुनिक बिहार के इतिहास में एक ऐसे मोड़ के रूप में देखी जा सकती है, जहाँ से औपनिवेशिक शोषण, सामाजिक असमानता और ग्रामीण असंतोष की प्रक्रिया स्पष्ट रूप से प्रारंभ होती है। आधुनिक बिहार के सामाजिक-राजनीतिक विकास को समझने के लिए इस व्यवस्था के प्रभावों का गहन अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।